Research Reinforcement | A Peer Reviewed International Refereed Journal | ISSN 2348-3857
Vol. 13, Issue 1 | May 2025 - October 2025 | pp. 44-48

श्री सर्वहितकारिणी सभा एवं आर्य समाज का अन्तर्सम्बन्ध : एक मूल्यांकन

Research Reinforcement
ISSN 2348-3857

घनश्याम यादव

शोधार्थी, इतिहास विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान)

डॉ. कुलवन्त सिंह शेखावत

सहायक आचार्य, राजस्थान, विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान)

शोध सारांश

राजस्थान के बीकानेर राज्य में, अन्य रियासतों की भाँति, राजनीतिक चेतना और सामाजिक जागृति की लहर 1905 ई. के बंगाल विभाजन एवं उसके प्रतिघातस्वरूप प्रारम्भ हुए स्वदेशी आन्दोलन से उत्पन्न हुई। इस दौर में भारतीय समाज में नवजागरण और पुनर्निर्माण की दिशा में अनेक सामाजिक-सांस्कृतिक संगठनों का उदय हुआ। विशेष रूप से 1875 ई. में स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज और 1907 ई. में चूरू में स्वामी गोपालदास द्वारा स्थापित श्री सर्वहितकारिणी सभा बीकानेर क्षेत्र के प्रमुख समाज सुधारक संगठन रहे। इन दोनों संस्थाओं का उद्देश्य समाज को धार्मिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक दृष्टि से सशक्त और प्रगतिशील बनाना था। आर्य समाज ने वैदिक सिद्धांतों के आधार पर समाज सुधार, शिक्षा के प्रसार और अंधविश्वासों के उन्मूलन पर बल दिया, वहीं सर्वहितकारिणी सभा ने स्थानीय स्तर पर उन्हीं विचारों को व्यवहारिक रूप में लागू करने का कार्य किया। दोनों संगठनों के बीच वैचारिक एकरूपता, कार्यप्रणाली में सामंजस्य और उद्देश्य की एकता ने सामाजिक चेतना को नई दिशा प्रदान की। प्रस्तुत शोध पत्र में इन दोनों संगठनों के ऐतिहासिक विकास, विचारधारात्मक समानताओं तथा कार्यात्मक संबंधों का विश्लेषण किया गया है। साथ ही यह भी प्रतिपादित किया गया है कि आज के युग में भी आर्य समाज और सर्वहितकारिणी सभा की शिक्षाएँ एवं कार्य-पद्धति अत्यंत प्रासंगिक हैं तथा आधुनिक समाज सुधार की प्रक्रिया में उनका उपयोग सार्थक रूप से किया जा सकता है।

संकेताक्षर—*आर्य समाज, श्री सर्वहितकारिणी सभा, स्वामी गोपालदास, दयानंद सरस्वती, बीकानेर रियासत*

प्रस्तावना

राजस्थान के जनजागरण में सहायक तत्वों ने बीकानेर में जन असन्तोष की अभिव्यक्ति के साधन और माध्यमों के विकास में भी योगदान दिया। बंगाल विभाजन और देश में होने वाले राष्ट्रीय आन्दोलन का प्रभाव राजस्थान पर भी पड़ने लगा जिनमें मुख्यतः 1905 ई. में बंगभग, विदेशी माल के बहिष्कार, आर्यसमाज की गतिविधियाँ, गरम दल के नेताओं के ओजस्वी भाषण तथा लार्ड मिण्टो और देशी रियासतों के शासकों द्वारा अपनाई गई कार्यशैली ने किया। 1909 ई. में लार्ड मिण्टो के आग्रह पर ही बीकानेर रियासत ने अपने यहाँ राजद्रोहात्मक गतिविधियों यथा- जुलूस निकालना, आम सभा करना, प्रदर्शनी लगाना, हेण्ड पम्पलेट या मुद्रित सामग्री का बिना आज्ञा वितरण आदि पर प्रतिबन्ध लगा दिया। ब्रिटिश भारत सरकार ने द इण्डियन स्टेट्स (प्रोटेक्शन अगेन्स्ट डिसअफेक्शन) एक्ट बना दिया जिसके अन्तर्गत यदि कोई भी व्यक्ति ब्रिटिश भारत में देशी राज्यों के शासक अथवा उसके प्रशासन के खिलाफ प्रचार करने हेतु कोई साहित्य प्रकाशित करेगा उसे पाँच वर्षों का कारावास और जुर्माना दोनों ही किया जा सकेगा।[1]

तत्कालीन समय में राजपूताने में अजमेर, आर्य समाज की राजनीतिक एवं क्रांतिकारी गतिविधियों का केन्द्र था। यहाँ के क्रांतिकारी नेता अर्जुनलाल सेठी और आर्य समाज के नेता चाँदकरण सारदा आदि का बीकानेर रियासत के लोगों से सम्पर्क

था। इस कारण रियासत में भी आर्य समाज की गतिविधियाँ बढ़ गई थी। 1907 ई. में एक बंगाली संन्यासी स्वामी भौमानन्द की सलाह पर चूरू में प. कन्हैयालाल ढण्ढ जो आर्य समाज से काफी प्रभावित थे, ने अपने शिष्य गोपालदास के साथ मिलकर श्री सर्वहितकारिणी सभा की स्थापना की जो बीकानेर रियासत के प्रशासन को खटकने लगी। 4 दिसम्बर 1914 ई. को इस सभा पर छापेमारी की कार्यवाही हुई और सरकार ने फाइल खोल दी।[2] बीकानेर में नारायण दत्त शर्मा नामक सरकारी कर्मचारी बीकानेर आर्य समाज के मंत्री पद पर थे और सक्रिय कार्यकर्ता थे। रियासती सरकार को यह नागवार गुजरा, परिणामस्वरूप अक्टूबर 1924 में इन्हें रियासत से देश निकाला के आदेश दे दिये।[3]

बीकानेर रियासत में आर्य समाज की भूमिका

ब्रिटिश भारत की अपेक्षा देशी रियासतों में राजनैतिक चेतना का विकास बहुत धीमी गति से हुआ, क्योंकि यहाँ निष्ठावान सक्षम एवं प्रेरणादायक नेतृत्व 19वीं शताब्दी के अन्त तक भी विकसित नहीं हो पाया किन्तु इस कमी की पूर्ति बहुत सीमा तक दयानंद सरस्वती के राजस्थान में आगमन एवं उद्बोधन से हुई। राजस्थान के राज्यों की जनता की सामाजिक, धार्मिक एवं राजनैतिक जागृति में स्वामी दयानन्द सरस्वती और उनके आर्य समाज का महत्वपूर्ण योगदान रहा। स्वामी दयानंद एक महान धर्म एवं समाज सुधारक ही नहीं, भारत के नवजागरण के प्रवर्तक भी थे। वे आधुनिक भारत के महान राष्ट्रीय नेता एवं विचारक थे जिन्होंने देश के समक्ष सर्वप्रथम स्वराज्य की स्पष्ट अवधारणा प्रस्तुत की। वैदिक संस्कृति की महत्ता का प्रतिपादन कर उन्होंने भारतीय राष्ट्रीयता के स्वरूप की व्याख्या की और स्वभाषा, स्वधर्म, स्वदेशी एवं स्वराज्य को राष्ट्रीयता का अनिवार्य तत्व बताया।[4] इनकी मान्यता थी कि एक अच्छे से अच्छा विदेशी शासन भी एक अव्यवस्थित देशी शासन की तुलना में कहीं अधिक हानिकारक होता हैं। स्वामी दयानंद ने बंगाल के "ब्रह्म समाज" से प्रभावित होकर 'आर्य समाज' का गठन किया। इसके लिए वो पूरे देश में घूमे। एक समय वे ब्रह्म समाज के साथ मिलना चाहते थे, इसलिए 1869 ई. में वे बंगाल गए थे। आर्य समाज की स्थापना दयानंद सरस्वती ने 1875 ई. में मुम्बई में की तथा 1877 ई. में इसकी एक शाखा लाहौर में भी खोली। लाला लाजपत राय जो पेशे से वकील थे वे आर्य समाज के प्रखर प्रचारक थे।

इस संगठन ने आरम्भ में सनातन धर्म में फैली कुरीतियों को दूर किया और फिर शिक्षा और संगठन पर जोर दिया। इस संगठन ने अंग्रेजों को शंकालु बना दिया था। इसे अंग्रेजों ने 1890 ई. में भारतीयों में उन्माद फैलाने वाला संगठन घोषित कर दिया। राजस्थान के जाट, किसान और अधिकांश स्वतंत्रता सेनानी इस समाज से जुड़े थे। चूरू में 1907 ई. में श्री सर्वहितकारिणी सभा का गठन आर्य समाज से जुड़े लोग जिनमें प्रमुखतः स्वामी गोपालदास जी द्वारा किया गया। बीकानेर में भी आर्य समाज का गठन हुआ।[5] स्वामी दयानंद ने राजस्थान को अपनी योजनाओं में जो विशेष महत्व दिया उसका विवेचन और विश्लेषण विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से करने का प्रयास किया है। प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. एम.एस. जैन ने प्रस्तुत सन्दर्भ में अपना मत इस प्रकार प्रस्तुत किया है—"राजस्थान की रियासतों में दयानन्द सरस्वती की योजना में कुलीन और अभिजात वर्ग के नेतृत्व का विशेष स्थान था। उनका उद्देश्य कुछ राज्य के शासकों और अधिकांश जागीरदारों तथा ठिकानेदारों को प्रेरणा देकर जन-साधारण में एक नई चेतना जागृत करना था। उनकी आशा थी कि शासक और जागीरदार उस पुनर्जागरण का नेतृत्व प्रदान कर सकेंगे जिसे वे स्वयं आरम्भ कर चुके हैं। इसी उद्देश्य से उन्होंने मेवाड़, मारवाड़, करौली, जयपुर, अजमेर आदि अन्य रियासतों की यात्राएँ की और उन्होंने ओजस्वी व्याख्यानों द्वारा राजाओं को शान-शौकत एवं अहंकारी जीवन छोड़ने की सलाह दी।"[6]

दयानंद सरस्वती तीन बार राजस्थान में पधारे और अपने जीवन के अन्तिम वर्ष अधिकांशत राजस्थान में बिताये। इन्होंने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ "सत्यार्थ प्रकाश" का दूसरा संशोधित संस्करण उदयपुर में रहते हुए ही पूरा किया। धौलपुर, करौली, भरतपुर, जयपुर, चूरू, अजमेर आदि नगरों की यात्रा कर महर्षि ने वहाँ शासकों तथा जनता में जागृति उत्पन्न करने का प्रयास किया। सन् 1880-1890 ई. के मध्य राजस्थान के अनेक नगरों जोधपुर, उदयपुर, जयपुर, अजमेर, शाहपुरा, मसूदा, चूरू, रामगढ़, नसीराबाद, पुष्कर आदि में आर्य समाज की शाखाएँ खोली गई और परिणामस्वरूप इनके माध्यम से जनता में सामाजिक चेतना विकसित होने लगी।[7] दयानंद सरस्वती का राजस्थान से 1865 में ही सम्पर्क स्थापित हो चुका था। नवम्बर 1886 ई. में स्वामी दयानंद जी आगरा में लार्ड लारेन्स के दरबार में उपस्थित होकर वहाँ से सीधे भरतपुर, जयपुर,

अजमेर व बीकानेर के चूरू नगर की यात्रा की।[8] बीकानेर राज्य में जन-जागृति के इतिहास से एक बात स्पष्ट होती है कि यहाँ पर प्रारम्भ में जितने भी जन-चेतना फैलाने वाले सूत्रधार थे, वे आर्य समाज के सिद्धान्तों से प्रभावित व्यक्ति ही थे। आर्य समाज ने लोगों में विश्वास और गौरव पैदा करने की कोशिश की और उन्हें उनके सुनहरे भविष्य की याद दिलाकर ललकारना तथा गौरवान्वित करना उनका उद्देश्य था। सामाजिक रीति-रिवाजों को धर्म से असम्बद्ध करके उनके सुधार के लिए मार्ग प्रशस्त कर दिया।[9] बाद में आर्य समाज का मुख्यालय अजमेर बन जाने से राजस्थान में आर्य समाज का प्रभाव बढ़ता ही गया। बीकानेर रियासत के ग्रामीण इलाकों में जन-जागृति पैदा करने, शिक्षा का प्रचार करने तथा सामाजिक कुरीतियों को दूर करने में स्वामी गोपालदास, चूरू; चौधरी हरिश्चन्द्र नैण व चौधरी ज्ञानीराम वकील, गंगानगर; सुबेदार बीरबल सिंह, उत्तरादावास; नारायण शर्मा, बीकानेर; स्वामी केशवानन्द, संगरिया; स्वामी लक्ष्मीदास, बीकानेर; स्वामी कर्मानंद, कालरी; स्वामी स्वतन्त्रतानन्द, रतनपुरा; चौधरी कुम्भाराम आर्य, फेफाना; चौधरी हनुमानसिंह, दूधवाखारा; स्वामी चेतनानन्द, रतनगढ़; पटवारी हंसराज, गोठडा; चौधरी जीवनराम व उनके पुत्र मोहरसिंह भजनीक, जैतपुरा (राजगढ़); चौधरी जीवनराम कडवासरा, दीनगढ़ (हनुमानगढ़); स्वामी नित्यानंद, खीचीवाला आदि का विशेष योगदान था। उन्होंने बीकानेर राज्य के ग्रामीण इलाकों में शिक्षा और समाज सुधार के माध्यम से व्यापक जागृति पैदा की। इन लोगों द्वारा जगह-जगह पाठशालाएँ स्थापित कर शिक्षा फैलाने तथा समाज सुधार के अन्तर्गत छुआछुत, मृत्युभोज, अनमेल विवाह, फिजूल खर्च, नशा, तम्बाकू व शराब खोरी, दहेज व रीत प्रथा (वर पक्ष से रुपये लेना) आदि के खिलाफ जोर-शोर से आवाज उठाकर ग्रामीण इलाकों में नव-चेतना पैदा की।[10] सामंती ढाँचे को चुनौती देने हेतु प्रवासी व्यापारी वर्ग ने राजस्थान में जनजागृति पैदा करने और राजनीतिक संस्थाओं की स्थापना में विशेष योगदान दिया। 1920 ई. में "राजस्थान सेवा संघ" स्थापित कर राजस्थान के विभिन्न स्थानों पर इसकी शाखाएँ खोली। ये प्रवासी व्यापारी वर्ग ही था, जिन्होंने राज्यों में समाज सुधार विशेष रूप से छुआछूत उन्मूलन व हरिजनों के लिए पाठशालाएँ आदि खोलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। व्यापारी वर्ग के अलावा शिक्षित मध्यम वर्ग ने भी बीकानेर में जनजागृति व जन-आन्दोलन में सबसे अधिक नेतृत्व दिया। बीकानेर में जनजागृति के सूत्रधार बाबू मुक्ताप्रसाद पेशे से वकील थे। स्वामी गोपालदास व स्वामी कर्मानन्द समाज सुधारक थे। सत्यनारायण सर्राफ भी वकील थे, मघाराम पेशे से वैध थे, बाबू रघुवरदयाल गोयल वकील थे तथा उनके सहयोगी गंगादास कौशिक व दाऊदयाल आचार्य पेशे से पत्रकार व पेरोकार थे। बीकानेर में जनजागृति पैदाकर जन-आन्दोलन को प्रारम्भ से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक चलाने का श्रेय इसी शिक्षित मध्यम वर्ग को था।[11]

बीकानेर राज्य में जनचेतना के अधिकांश प्रसारक नेता स्वयं आर्यसमाजी थे अथवा आर्यसमाज की विचारधारा से प्रभावित थे। आर्यसमाज के नेताओं ने स्वामी दयानन्द सरस्वती की शिक्षाओं का प्रसार कर राज्य में राजनैतिक चेतना के प्रादुर्भाव की पृष्ठभूमि तैयार की। बीकानेर में नारायण दत्त नामक व्यक्ति, जो सरकारी कर्मचारी थे, बीकानेर आर्यसमाज के मंत्री थे, उन्होंने सुचारु रूप से आर्यसमाज की सामाजिक एवं राष्ट्रीय गतिविधियों को संचालित किया जिससे राज्य सरकार उनसे क्रुद्ध हो गई और उन्हें सरकार विरोधी मानकर राज्यसेवा से हटा दिया और अक्टूबर 1924 ई. में राज्य से निर्वासित भी कर दिया।[12]

चूरू मण्डल में निम्बार्क व निरंजनी सम्प्रदायों का पर्याप्त प्रभाव रहा है, जहाँ इनके अनेक मंदिर है। चूरू का बड़ा मन्दिर निम्बार्क सम्प्रदाय का है। अर्वाचीन काल में सुजानगढ़ आर्य समाज का केन्द्र रहा। आर्य समाज के व्याख्याताओं में चूरू के पं. गणपति शर्मा का नाम अग्रगण्य है, ये आर्य समाज में स्वामी दयानंद के बाद दूसरे प्रभावशाली व्याख्याता माने जाते है। प्रसिद्ध है कि इन्होंने श्रीनगर (कश्मीर) में पादरी जॉनसन को करारी पराजय दी थी। केवल 36 वर्ष की अवस्था में इनका निधन हो गया।[13]

चूरू में सामाजिक एवं राजनैतिक चेतना के सृजनकर्ता स्वामी गोपालदास स्वयं निम्बार्क सम्प्रदाय के अनुयायी होते हुए भी आर्य समाज की विचारधारा से अत्यधिक प्रभावित थे। उन्हें उनके गुरु पं. कन्हैयालाल जी से आर्य समाज के सिद्धान्तों का ज्ञान प्राप्त हुआ। उन पर अजमेर के सुप्रसिद्ध आर्य समाजी नेता श्री चांदकरण शारदा तथा स्वामी नृसिंहदेव सरस्वती का गहरा प्रभाव था। स्वामी गोपालदास ने आर्य समाज द्वारा प्रतिपादित सामाजिक व राष्ट्रीय विचारों को मूर्तरूप देने के उद्देश्य से चूरू में श्री सर्वहितकारिणी सभा की स्थापना की,

जो स्थापना के समय से ही बीकानेर सरकार की वक्रदृष्टि का शिकार बन गई। इस सभा के मंच पर भाषण देने के लिए स्वामी जी आर्य समाज के नेताओं को आमंत्रित करते थे। ऐसे आर्य समाजी नेताओं में स्वामी नृसिंह देव सरस्वती प्रमुख थे। 1918 ई. में जब चूरू में प्लेग की महामारी फैली तो स्वामी गोपालदास जी ने अजमेर आर्य समाज के नेता श्री चांदकरण शारदा से अनुरोध कर वहाँ से छह प्रशिक्षित स्वयंसेवक मंगवाएँ जिन्होंने उल्लेखनीय सेवा कर अनेक लोगों की प्लेग से प्राण रक्षा की।

1921 ई. में जब श्री सर्वहितकारिणी सभा का भवन तैयार हो गया तो उसके उद्घाटन के अवसर पर स्वामी जी ने नृसिंहदेव सरस्वती तथा सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी श्री अर्जुनलाल सेठी को आमंत्रित कर उनके भाषण करवाएँ। स्वामी गोपालदास पर जब बीकानेर राजद्रोह का केस चला तो स्वामी जी ने न्यायालय में दिये गये अपने बयान में स्वयं के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर आर्य समाज के प्रभाव को स्वीकार किया। 1889 ई. में अजमेर से "राजस्थान समाचार" नामक प्रमुख हिन्दी समाचार पत्र प्रकाशित किया गया और उसके संपादक थे— मुंशी समर्थदान। यह पत्र आर्य समाज की राष्ट्रीय एवं समाज सुधार की प्रवृत्ति से प्रभावित रहा और इसने राजस्थान की विभिन्न रियासतों में जनजागरण की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया।[14]

आर्य समाज के सिद्धान्तों से प्रेरित सर्वहितकारिणी सभा का बहुद्देशीय प्रयोजन हेतु निर्माण किया गया। इसके उद्देश्य अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, समाज सुधार, शिक्षा प्रचार-प्रसार, जनसेवा आदि थे। प्रारम्भ में राजनीतिक गतिविधियाँ इसका उद्देश्य नहीं था। सभा के तृतीय अधिवेशन में सभा के मंत्री श्रीराम जी ओझा जो मूलतः आर्यसमाजी थे अपने छपे हुए भाषण "विद्या प्रचार ही देश सेवा है" में इसे स्पष्ट किया है।[15] धर्म निरपेक्षता का भाव भी सभा में स्पष्टतः परिलक्षित होता है। श्रावक शुक्ल 7 संवत् 1969 को स्थापित हुई "राजस्थान उद्योगवाद्धिनी सभा" जिसके द्वारा प्रतिदिन रात्रि को पिछड़ी जातियों के व्यक्तियों को एक घंटे हिन्दी पढ़ाये जाने की निःशुल्क व्यवस्था की गई।[16]

स्त्री शिक्षा के प्रचार-प्रसार हेतु सभा ने 10 नवम्बर 1911 को पुत्री पाठशाला की स्थापना का निर्णय लिया, जिसका रूढ़िवादी लोगों ने विरोध किया, पाठशाला में आने वाली लड़कियों पर पत्थर बरसाये लेकिन पुत्री पाठशाला रूपी ये पौध निरन्तर पुष्पित एवं पल्लवित होता गया। इस पुत्री पाठशाला की प्रथम अध्यापिका श्रीमती पार्वती देवी थी, उनके पति पं. भगतराम दाधीच भी यहाँ अध्यापक थे। सभा ने एक पुस्तकालय एवं एक वाचनालय भी शुरू किया। सभा द्वारा अछूतों के उद्धार एवं धर्म परिवर्तन रोकने जैसे कार्यों द्वारा सामाजिक समरसता के पुनीत कार्य भी किये गये। इस हेतु परिगणित जातियों में शिक्षा के प्रचार-प्रसार वास्ते कालेराबास में सभा द्वारा 01 जनवरी 1921 को कबीर पाठशाला प्रारम्भ की गई। सभा के भवन उद्घाटन के अवसर पर श्री अर्जुनलाल सेठी का स्वदेशी प्रचार, राष्ट्रीय शिक्षा पर तथा श्री चांदकरण सारदा का विवाह सम्मत आयु पर ओजस्वी उद्बोधन हुआ। इसी प्रकार 01 अगस्त 1921 को लोकमान्य तिलक की बरसी का आयोजन किया गया जिसमें स्वदेशी वस्त्रों के महत्व पर प्रकाश डाला गया। अब स्त्रियों में भी जागृति आ गई और वे भी सभा की मीटिंग में सम्मिलित होने लगी। इनमें सुबीरा देवी का उल्लेखनीय योगदान रहा। 1921 ई. में खादी के प्रचार के दौरान सभा ने सस्ते दामों में चरखे उपलब्ध कराये जिसे दूर-दूर तक लोगों ने मंगवाये। 1921 ई. में सभा ने 34 रुपये तिलक स्वराज फण्ड और 25 रु. कांग्रेस सदस्यता शुल्क भेजकर राष्ट्रीय आन्दोलन से जुड़ने का प्रमाण दिया। इस प्रकार श्री सर्वहितकारिणी सभा प्रारम्भ में गैर-राजनीतिक एवं सामाजिक कार्यों को करने वाली संस्था धीरे-धीरे राष्ट्रीय आन्दोलन से जुड़ती चली गई।[17]

निष्कर्ष

इस प्रकार प्रस्तुत पत्र में सर्वहितकारिणी सभा द्वारा आर्य समाज से प्रेरित होकर किये गये प्रमुख कार्यों तथा समाज सुधार, शिक्षा, जन-चेतना आदि का विवेचन किया गया है तथा बीकानेर रियासत की राजनैतिक पृष्ठभूमि में बिना विचलन सर्वहितकारिणी सभा के छोटे-छोटे प्रयासों से हुए आदोलन को रेखांकित किया गया है। आर्य समाज की वैचारिक प्रेरणा ने सभा को संगठनात्मक शक्ति और सुधारवादी दृष्टिकोण प्रदान किया, जबकि सभा ने इन सिद्धांतों को स्थानीय स्तर पर मूर्त रूप दिया। धार्मिक रूढ़ियों के विरोध, महिला शिक्षा, स्वदेशी प्रचार और राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी दोनों के साझा प्रयासों का परिणाम था। इस प्रकार, यह संबंध केवल वैचारिक न होकर जनचेतना और समाज निर्माण का आधार बना।

ISSN 2348-3857

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. जर्नल ऑफ राजस्थान इन्स्टीट्यूट ऑफ हिस्टोरिकल रिसर्च, 1985-86, वॉल्यूम XXIII नं. 1, पृ.सं. 17-18. (रा.रा.अ. बीकानेर)।
2. कार्यवाही रजिस्टर श्री सर्वहितकारिणी सभा चूरू, स्वतंत्रता सेनानी पं. चन्दनमल बहड स्मारक संस्थान, संग्रहालय, चूरू।
3. तरुण राजस्थान 30 नवम्बर 1924, बीकानेर प्रेस क्लीपिंग फाइल नं. 33/1924, रा.रा.अ. बीकानेर।
4. विद्यालंकार, सत्यकेतु, आर्य समाज का इतिहास खण्ड 2, पृ.सं. 407-709
5. सीतारम्मेया, पट्टाभी, द हिस्ट्री ऑफ द इण्डियन नेशनल कांग्रेस, पृ.सं. 27
6. टाक, वैद्य रतिराम, बीकानेर इतिहास एवं संस्कृति, ज्योति पब्लिकेशन्स नागरी भण्डार, बीकानेर, 2019, पृ.सं. 27
7. जैन, डॉ. एम.एस., आधुनिक राजस्थान का इतिहास, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1989 ई., पृ.सं. 198
8. सक्सेना, के. एस., राजस्थान में राजनैतिक जागृति (1902-1950 ई.), 1971 ई., पृ.सं. 107-115
9. मुद्गल, चेतना, राजस्थान का स्वतंत्रता आन्दोलन, विकास प्रकाशन बीकानेर, 1988 ई., पृ.सं. 23-24
10. शर्मा, डॉ. गिरिजाशंकर, मारवाड़ी व्यापारी, आर्थिक व सामाजिक विश्लेषण, विकास प्रकाशन बीकानेर, 1988 ई., पृ.सं. 58-97
11. ठाकुर, देशराज, रियासती भारत के जाट जनसेवक, 1949 ई., पृ.सं. 113-166
12. डॉ. पेमाराम, उत्तरी राजस्थान में कृषक आन्दोलन, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, 2020, पृ.सं. 35-36
13. शर्मा, डॉ. रामगोपाल, राजस्थान में प्रजामण्डल आन्दोलन भाग-4, बीकानेर व जैसलमेर, राज. स्वर्ण जयंती समारोह समिति, जयपुर, राज. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2003, पृ.सं. 34-35
14. अग्रवाल, गोविन्द, चूरू मण्डल का शोधपूर्ण इतिहास (प्रथम खण्ड), लोक संस्कृति शोध संस्थान, नगरश्री चूरू, राज., 1974 ई., पृ.सं. 413-414
15. पूर्वोक्त, पृ. 19-35 राज. में प्रजामण्डल आन्दोलन, भाग-4
16. सरावगी, बालचन्द, विद्या प्रचार ही देश सेवा हैं, संवत् 1967, कलकत्ता, स्वतंत्रता सेनानी पं. चन्दनमल बहड़ स्मारक स. संग्राहालय, चूरू।
17. श्री सर्वहितकारिणी सभा, चूरू की शाखा सभा "राजस्थान उद्योग वर्धिनी सभा" चूरू के उद्देश्य तथा नियम, आर.के. टिबडवाला, कृष्ण प्रेस, 92 कॉटन स्ट्रीट, कलकत्ता।
18. पुरोहित, डॉ. महेन्द्र, भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में राज्यों की भूमिका, आदित्य पब्लिकेशन, बीकानेर, 2013, पृ.सं. 110-112